“Dhwanilekhagar Paramparao Ka Khazana (Uttar Bhartiya Shastriya Gaayan ke Paripreksh mein) Ek Adhyayan”

“ध्वनिलेखागार:परंपराओं का ख़जाना (उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन के परिप्रेक्ष्य में) एक अध्ययन”

(SYNOPSIS)

(विषय-संक्षेप)

फ़ैकल्टी ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स

द महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटि ऑफ बड़ौदा

पी.एच.डी (भारतीय शास्त्रीय संगीत-गायन)

उपाधि के हेतु प्रस्तुत शोधसार

शोधछात्र

प्रणव हितेन्द्रकुमार पंड्या

मार्गदर्शक (Guide)

डॉ.अश्विनी कुमार सिंह

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर

सत्यं शिवं सुन्दरम्

Estd. 1949

Accredited “A+” by NAAC

भारतीय शास्त्रीय संगीत (गायन) विभाग

द महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटि ऑफ बड़ौदा

वर्ष-2016-2024

Registration No. FOPA/54

Registration Date:12 May 2016

“ध्वनिलेखागार:परंपराओं का ख़जाना (उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन के परिप्रेक्ष्य में) एक अध्ययन”

<u>प्रस्तावना</u>-

भारतीय शास्त्रीय संगीत आदिकाल से अविरत रूप से चला आ रहा हैं। सर्वे भारतीय कलाए गुरुमुखी रही हैं और यह अद्‌भूत परम्पराओं का निर्वाह एक पीढ़ी से आगामे पीढ़ी तक अविरत रूप से प्रवाहित होता रहा हैं। जिसमें अनेक गुरुजनों, वाज़ेकारों, कलाकारो, गुनिजनों तथा विवेचको का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। अनेकविध राग, रचनाए एवं सौंदर्यात्मकता को देखने का और अनुभूति करने का अभिगम व्यक्तिगत रूप से भिन्न भिन्न रहा हैं। इसलिए, यह परंपरागत कलाए ज्यादा से ज्यादा नए आयामों तथा विभिन्न द्रष्टिकोण प्राप्त करती रही हैं।

यह तमाम कलाए आगामी पीढ़ी में संगृहीत और संवर्धित होती रहे इसलिए अनेक ज्ञाताओं ने प्रयत्न किए हैं। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के गायन विषय में पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर जी और पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे जी द्वारा परंपरागत बंदिशों को संगृहीत करने तथा अनेक वाज़ेकार-कलाकारो की सांगीतिक सोच को आगामी पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए स्वरलिपी की रचना की गई। जिससे अनेक बंदिश और रचनाए आज तक जीवंत रही हैं परंतु, ध्वनिमुद्रण की प्रौद्योगिकी के विकास के बाद अत्यंत सचोट रूप से विचारो का दस्तावेजीकरण और अन्य तक स्पष्ट रूप से पहुंचाना संभव हुआ हैं। ध्वनिमुद्रण के यह अभिलेखागार अभ्यासु के लिए पथप्रदर्शक और उनकी परंपराओं के निर्वाह के लिए आशीर्वादरूप हैं।

गुरूपरंपरा से अनेक वर्षो की कठिन साधना के बाद प्राप्य ज्ञान आगामी पीढ़ी को वारसागत न दे सके और उनकी साधनाओं की पराकाष्ठा, विचार एवं कला परत्वे उनका अभिगम नवोदित कलाकारो, वाज़ेकारों तक न पहुँचा सके तो संस्कृति पूर्णरूप से खिल नहीं सकती। एसे ध्वनिलेखागार अनेक गुरुओं के ज्ञान को उनके ही स्वमुख से प्रस्तुतीकरण करा सकते हैं। ध्वनिलेखागार के माध्यम से तमाम गुरुओं और उनकी परंपराए जीवंत रहती हैं।

<u>प्रस्तुत विषय पर शोध की आवश्यकता-</u>

प्रस्तुत विषय पर मुझे शोध कार्य करने के इच्छा इसलिए हुई कि मेरे गुरु श्री ऋषिकुमार शास्त्री जी की निश्रा में मैंने 7 से 8 साल गुजरात में अहमदाबाद स्थित सप्तक ध्वनिलेखागार में ध्वनिमुद्रण डिजिटाइजेशन और अन्य तमाम संबन्धित अभिलेखीय कार्य किया हैं। ध्वनिलेखागार संबन्धित कार्य, पुरानी ध्वनिमुद्रण (रेकोर्डिंग) करने की प्रणाली, संगीत के विद्यार्थियों और कलाकारो का ध्वनिलेखागार के प्रति अभिगम, भारत के ध्वनिलेखपाल के विषय में माहिती, ध्वनिलेखागार का एक दूसरे से जुड़ाव और सहयोग इत्यादि विषय पर शोध होना जरूरी हैं। यह परंपरागत संगीत को संरक्षित करती प्रणाली के प्रति नई पीढ़ी में उदासीनता न हो और परंपरा को जानकार, इतिहास को समजकर नए भविष्य की ओर युवा अग्रेसर हो इसलिए यह संशोधन ग्रंथस्थ करने का मेरा मुख्य उद्देश्य रहा हैं।

इस विषय पर कार्य करके सिर्फ डिग्री हासिल करना मेरा लक्ष्य नहीं हैं। भविष्य में मेरे इस विषय में बदलते युग और प्रौध्योगिकी को लेकर तथा तथ्यो को संजोकर दस्तावेजीकरण हो, नई पीढ़ी को ध्वनिलेखागार के प्रति सन्मान की भावना हो और संस्कृति के संरक्षण कार्य में रस-रूचि पैदा हो और "बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय" सब को लाभ हो यही उद्देश्य हैं।

<u>परिकल्पना :</u>

उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन के अध्ययन-अध्यापन में प्राचीन समय की वैदिक पद्धति यानि कि गुरुशिष्य परंपरा का स्थान प्रवर्तमान समय में पाश्चात्य शैक्षणिक अध्ययन-अध्यापन प्रणाली ने लिया है तथा जिस प्रकार से प्रवर्तमान समय में वैज्ञानिक तकनीकी का प्रयोग बढ़ा है, उसमे ध्वनिलेखागार का अस्तित्व होना या उनका अभ्यास उपयुक्त नही है। यह पूर्वधारणा को ध्यान मे रखकर तथ्यो को उजागर करने हेतु यह संशोधन कार्य किया गया है। यहा 'ध्वनिलेखागार'' का मतलब ध्वनिमुद्रण का संग्रह, संवर्धन, वर्गीकरण एवं श्रोता-रसिक के लिए व्यवस्थापन।

<u>माहिती एकत्रीकरण की पद्धति:</u>

शोधकार्य द्वारा निम्न दर्शित कार्य पूर्ण करने का लक्ष्य हैं।

- ध्वनिलेखपाल की अनुमति लेकर साक्षात्कार द्वारा ध्वनिलेखागार संबन्धित माहिती एकत्रित करना ।

- उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन के कलाकारों से साक्षात्कार करके अभिप्राय अंकित करना।
- विश्वविद्यालय और संस्थागत पद्धति से संगीत की शिक्षा ले रहे विद्यार्थीओ का द्वानिलेखागार के प्रति रुझान जानने के लिए प्रश्नावली तैयार करके माहिती एकत्रीकरण करना।
- यह विषय संबन्धित आर्टिकल, वेबसाईट या इस विषय संबन्धित विषय पर किए गए संशोधन का अभ्यास करना और उपयुक्त तथ्यो को शोधकार्य में समाहित करना।
- इन्टरनेट तकनीक का पूर्णतः उपयोग करके विषय संबन्धित अभ्यास करना और माहिती एकत्रित करना। उपर्युक्त सामग्री के आधार पर उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन के परीप्रेक्ष्य में ध्वनिलेखागार का अभ्यास करके संशोधन कार्य करना।

पुनरावलोकन

प्रस्तुत विषय में संबंधित माहिती एकत्रित कर के पुनरावलोकन किया गया है। जरूरी माहिती रखकर अन्य विसंगत माहिती छोड़ दी गई हैं और संबंधित तथ्यो का विश्लेषणात्मक रूप में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया हैं।

उद्देश्य

भारतीय शास्त्रीय संगीत आदिकाल से अविरत रूप से चला आ रहा है। उस पर सर्वे भारतीय कलाए गुरुमुखी रही है, और यह अद्‌भूत परंपराओ का निर्वाह एक पीढ़ी से आगामी पीढ़ी तक अविरत रूप से प्रवाहित होता रहा है। जिसमे अनेक गुरुजनों, वाग्येकारो, कलाकारो, गुनिजनों तथा विवेचको का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अनेकविध राग, रचनाए एवं सौंदर्यात्मकता को देखने का और अनुभूति करने का अभिगम व्यक्तिगत रूप से भिन्न भिन्न रहा है। इसीलिए यह परंपरागत कलाएं ज्यादा से ज्यादा नए आयामो तथा विभिन्न द्रष्टिकोण प्राप्त करती रही है।

यह तमाम कलाएं आगामी पीढ़ी में संगृहीत और संवर्धित होती रहे इसीलिए अनेक ज्ञाताओ ने अनेक प्रयत्न किए है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के गायन विषय में पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर जी और पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे जी द्वारा परंपरागत बंदिशों को संगृहीत करने तथा अनेक वाग्येकार-कलाकारो की सांगीतिक सोच को आगामी पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए स्वरलिपी की रचना की है। जिससे अनेक बंदिश और रचनाए आजतक जीवंत रही है, परंतु ध्वनिमुद्रण की प्रौध्योगिकी के विकास के बाद अत्यंत सचोट रूप से विचारो का दस्तावेजीकरण

और अन्य तक स्पष्ट रूप से पहुँचाना संभव हुआ है। ध्वनिमुद्रण के यह अभिलेखागार अभ्यासु के लिए पथ प्रदर्शक और उनकी परंपराओ के निर्वाह के लिए आशीर्वाद रूप है।

गुरूपरंपरा से अनेक वर्षो की कठिन साधना के बाद प्राप्य ज्ञान आगामी पीढ़ी को वारसागत ना दे सके और उनकी साधनाओ की पराकाष्ठा, विचार एवं कला परत्वे अभिगम नवोदित कलाकारो, वाग्येकारो को ना दे सके तो संस्कृति पूर्ण रूप से खिल नहीं सकती। एसे अभिलेखागार अनेक गुरुओ के ज्ञान को उनके ही स्वमुख से प्रस्तुतीकरण करा सकता है। ध्वनिलेखागार के माध्यम से तमाम गुरुओ और उनकी परंपराए जीवंत रहती है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन के विद्यार्थीओ का यह ध्वनिलेखागार के अभ्यास के प्रति रूचि पैदा हो, कला और संस्कृति के संरक्षण तथा संवर्धन हेतु नयी पीढ़ी तैयार हो यह उद्देश्य के साथ यह संशोधन प्रवर्तमान समय की मांग है।

संशोधन क्रियाविधी

यह संशोधन करने के लिए संबन्धित माहिती उपलब्ध करनी और उस पर से निर्धारित पूर्वधारणा का अभ्यास करना आवश्यक है। जिसके अनेक तरीके है। यह तकनीक को संशोधन क्रियाविधी (Research Methodology) कहते है। प्रस्तुत संशोधन कार्य के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि (Descriptive Research Method) पसंद की गई है। इनका प्रमुख मुद्दा वर्तमान घटनाक्रमों का अध्ययन करना है। अर्थात वर्तमान घटनाक्रमों के विभिन्न पक्षों का विवरण देना इस प्रकार के शोधो को पूरा करना निहित उद्देश्य है।

यह संशोधन संबन्धित तथ्यो को उजागर करने हेतु निम्न लिखित इकाइओका सर्वेक्षण के लिए प्रयोग किया गया है।

- भारत के सुप्रसिध्ध ध्वनिलेखागार
- लेखपाल
- उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन क्षेत्र के कलाकार
- विश्वविध्यालय और संगीत शिक्षण प्रदान करती संस्था के विद्यार्थी

ध्वनिलेखागार की मुलाक़ात, कलाकारो और लेखपालों से साक्षात्कार तकनीक का प्रयोग एवं विद्यार्थीओ के लिए तैयार की गई प्रश्नावली के उत्तर से तथ्यो की माहिती एकत्रित कि गई है।

अनुक्रमणिका

अध्याय- **विषय वस्तु**

ऋण स्वीकार

विषय प्रवेश

प्रथम अध्याय -प्रस्तावना

1:1 पूर्व भूमिका

1:2 कला

1:3 प्रवर्तमान समय में प्रस्तुत संशोधन कीआवश्यकता

1:4 पूर्वधारणा

1:5 प्रस्तुत संशोधन के उद्देश्य

1:6 संशोधन का व्याप और मर्यादायें

1:7 संशोधन क्रियाविधि

प्रथम अध्याय-

प्रस्तुत अध्याय के अंतरगर्त शोधकार्य का विहंगावलोकन किया गया है। यह एक पूर्वभूमिका है की किस तरह से शोध कार्य के उद्देश्य एवं मर्यादाओं के साथ निष्कर्ष तक पहुंचा गया है। इस अध्याय में शोध कार्य के लिए उपयुक्त किए जाने वाली क्रियाविधी का ढांचा प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय - भारतीय शास्त्रीय संगीत –परिचय

2:1 उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत

2:1:1 गायन शैलियाँ

2:1:2 गायन के घराने

2:2 दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत

द्वितीय अध्याय-

यह अध्याय भारतीय शास्त्रीय संगीत–परिचय से संबंधित विषय को ध्यान मे रख कर लिखा गया है। इस अध्याय मे शोधार्थी द्वारा उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत मे गायन शैलियाँ की विस्तृत व्याख्या

को रखा गया है साथ जी गायन के घराने तथ्यपरक रूप से किया गया है इस अध्याय के अंत मे दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय - ध्वनिमुद्रण की कार्यप्रणाली

3:1 संगीत में टेक्नोलोजी

3:2 ध्वनिमुद्रण का इतिहास

3:3 ध्वनिमुद्रण संग्रह के माध्यम

3:3:1 78 आर.पी.एम. LP

3:3:2 स्पूल

3:3:3 औडियो – वीडियो कैसेट्स

3:3:4 कोम्पेक्ट डिस्क

3:3:5 पेन ड्राइव, हार्ड डिस्क, सर्वर

<u>तृतीय अध्याय</u>- यह अध्याय ध्वनिमुद्रण की कार्यप्रणाली से संबंधित विषय को ध्यान मे रख कर लिखा गया है। इस अध्याय मे शोधार्थी द्वारा ध्वनिलेखागार के मूल घटक ध्वनिमुद्रण संबन्धित कार्यप्रणाली का वर्णन तृतीय अध्याय में सम्मिलित किया गया है। जिसमे ध्वनिमुद्रण का इतिहास, संग्रह करने के माध्यमों का विस्तृत वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय- ग्रंथालय, सांगीतिक ग्रंथालय, अभिलेखागार, ध्वनिलेखागार और ध्वनिलेखपाल

4:1 ग्रंथालय

4:1:1 ग्रंथालय के प्रकार

4:1:1:1 राष्ट्रीय ग्रंथालय

4:1:1:2 शैक्षणिक ग्रंथालय

4:1:1:3 सार्वजनिक ग्रंथालय

4:1:1:4 विशिष्ट ग्रंथालय

4:1:2 सांगीतिक ग्रंथालय(Music Library) एक विशिष्ट ग्रंथालय

4:2 अभिलेखागार

4:2:1 अभिलेखागार की लाक्षणिकता

4:2:2 अभिलेखागार का महत्व

4:2:3 अभिलेखागार और सुशासन

4:3 अभिलेखागार और ग्रंथालय का भेद

4:4 ध्वनिलेखागार (Music Archives)-एक विशिष्ट अभिलेखागार

4:4:1 व्याख्या

4:4:2 उद्देश्य

4:4:3 आवश्यकता

4:5 ध्वनिलेखागार के प्रकार एवं कार्यप्रणाली

4:5:1 व्यक्तिगत ध्वनिलेखागार

4:5:2 सार्वजनिक ध्वनिलेखागार

4:6 भारत के ध्वनिलेखागार

4:6:1 सरकार हस्तक के ध्वनिलेखागार

4:6:1:1 ऑल इण्डिया रेडियो

4:6:1:2 दूरदर्शन

4:6:1:3 प्रसार भारती

4:6:1:4 IGNCA, नई दिल्ली

4:6:1:5 संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली

4:6:2 संस्था/ट्रस्ट/विश्वविद्यालय संचालित ध्वनिलेखागार

4:6:2:1 सप्तक आर्काइव्स, अहमदाबाद, गुजरात

4:6:2:2 संवाद फाउंडेशन, मुंबई, महाराष्ट्र

4:6:2:3 जाधवपुर यूनिवर्सिटी

4:7 ध्वनिलेखपाल (Archivist)

4:7:1 एक पुरालेखपाल/ध्वनिलेखपाल का उद्देश्य

4:7:2 भारत के ध्वनिलेखपाल/व्यक्तिगत ध्वनिमुद्रण संग्रहकार

<u>चतुर्थ अध्याय</u>-

यह अध्याय ग्रंथालय, सांगीतिक ग्रंथालय, अभिलेखागार, ध्वनिलेखागार और ध्वनिलेखपाल से संबंधित विषय को ध्यान मे रख कर लिखा गया है। इस अध्याय मे शोधार्थी द्वारा ग्रंथालय, सांगीतिक ग्रंथालय, अभिलेखागार, ध्वनिलेखागार और ध्वनिलेखपाल संबन्धित माहिती हैं। प्रवर्तमान समय में भारत के सुप्रसिध्ध ध्वनिलेखागार के संबंध में किए गए अभ्यास, प्रवर्तमान स्थिति, निर्माण, कार्य प्रणाली और उनके उद्देश्य का निरूपण यह अध्याय में किया गया है।

पंचम अध्याय- ध्वनिलेखागार की मर्यादायें एवं निवारक उपाय

5:1 ध्वनिलेखागार की मर्यादायें

5:1:1 व्यक्तिगत ध्वनिलेखागार की मर्यादायें

5:1:2 सार्वजनिक ध्वनिलेखागार की मर्यादायें

5:2 निवारक उपाय

<u>पंचम अध्याय-</u>

यह अध्याय ध्वनिलेखागार की मर्यादायें एवं निवारक उपाय से संबंधित विषय को ध्यान मे रख कर लिखा गया है। इस अध्याय मे शोधार्थी द्वारा ध्वनिलेखागार संबन्धित मर्यादाए एवं निवारात्मक उपायो के विषय में विस्तृत चर्चा की गई है। सामान्य जनता जो उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन में रसमग्न है, उसे ध्वनिलेखागार किस तरह से मददगार हो सकता है, यह संभावनाओ का वर्णन प्रस्तुत अध्याय में किया गया है।

षष्ठम अध्याय- ध्वनिलेखागार विषयक सर्वेक्षण और निष्कर्ष

6:1 सर्वेक्षण

6:2 निष्कर्ष

<u>षष्ठम अध्याय</u> –

यह अध्याय ध्वनिलेखागार विषयक सर्वेक्षण और निष्कर्ष से संबंधित विषय को ध्यान मे रख कर लिखा गया है। इस अध्याय मे शोधार्थी द्वारा अध्याय में विद्यार्थी, कलाकार और ध्वनिलेखपाल से

प्रश्नावली से प्राप्त माहिती का विश्लेषण किया गया हैं। विविध सार्वजनिक ध्वनिलेखागार एवं व्यक्तिगत ध्वनिलेखागार के पास उपलब्ध दूर्लभ ध्वनिमुद्रणों की यादी (मेटा-डेटा) दर्शाया गया है।

<u>सप्तम अध्याय</u> – सुझाव और उपसंहार

यह अध्याय सुझाव और उपसंहार से संबंधित विषय को ध्यान मे रख कर लिखा गया है। इस अध्याय मे शोधार्थी द्वारा अध्याय में समग्र शोध कार्य संबन्धित सुझाव और उपसंहार दर्शाया है। प्रस्तुत शोधकार्य में सर्वेक्षण हेतु संगीत के विद्यार्थी, कलाकार और धनिलेखपाल के लिए निर्मित प्रश्नावली समाविष्ट हैं। जिन ध्वनिलेखागार से उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन के ध्वनिमुद्रणों की यादी (मेटा-डेटा) उपलब्ध हुई हैं, वह सूची के रूप में समाविष्ट है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. द इंडियन थीओसोफिस्ट/ओफिसियल जरनल ऑफ द इंडियन सेक्शन, द थियोसोफ़िकल सोसायटी/ अक्तूबर-नवम्बर 1985 / संस्करण 82 क्रमांक 10 एवं 1 / पृष्ठ-43
2. राजेंद्र, अपर्णा/ म्यूजिक लाइब्रेरी इन इंडिया/ थीसीस / यूनिवर्सिटी ऑफ पूणे / 2007/ पृष्ठ-2
3. वसंत / संगीत विशारद / 28वी आवृति / जनवरी-2013/ पृष्ठ-29
4. राजकुमार, गोविन्द. "उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत." भारतीय संगीत एवं संगीत कला का इतिहास, 117-133. लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, 2010.
5. पण्डित, रवि शंकर. "उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत: एक अध्ययन." संगीत विज्ञान, 31(1-2), 2007, 47-58.
6. भाटिया, गीता. "उत्तर भारतीय संगीत की परंपरा." संगीत और कला: एक समीक्षा, 4(2), 2012, 15-22
7. https://www.samajkaryshiksha.com/2021/06/descriptive-research method.html
8. https://sangeetnatak.gov.in/sections/music
9. https://www.nps.gov/edis/learn/historyculture/origins-of-sound-recording-edouard-leon-scott-de-martinville.htm
10. राजेंद्र, अपर्णा/ म्यूजिक लाइब्रेरी इन इंडिया / थीसीस / यूनिवर्सिटी ऑफ पूणे/2007 /पृष्ठ-39

11. https://dal.ca.libguides.com/c.php?g=257178&p=1718238

12. राजेंद्र, अपर्णा / म्यूजिक लाइब्रेरी इन इंडिया/ थीसीस/यूनिवर्सिटी ऑफ पूणे / 2007 / पृष्ठ-42

13. https://prasarbharati.gov.in/pb-archives/

14. https://ncaa.gov.in/repository/common/about

15. https://sangeetnatak.gov.in/sections/documentation